Online at: https://researchtrendsjournal.com **ISSN No:** 2584-282X

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 2; Issue 1; 2024; Page No. 326-330

Received: 02-11-2023
Accepted: 16-12-2023

रायपुर औद्योगिक क्षेत्र में व्यसन और इसके परिणामस्वरूप सामाजिक विघटनः महिला केंद्रित नीतिगत हस्तक्षेपों की आवश्यकता और प्रभावशीलता

[1]Laxmi Narayan and [2]Dr. Esha Chatterjee

[1]Research Scholar, Department of Sociology, Kalinga University, Naya Raipur, Chhattisgarh, India
[2]Assistant Professor, Department of Sociology, Kalinga University, Naya Raipur, Chhattisgarh, India

Corresponding Author: Laxmi Narayan

सारांश
यह शोध–पत्र रायपुर औद्योगिक क्षेत्र में बढ़ती हुई व्यसन की प्रवृत्तियों और उसके फलस्वरूप उत्पन्न सामाजिक विघटन पर केंद्रित है, विशेषकर महिलाओं के संदर्भ में। इसमें यह विश्लेषण किया गया है कि किस प्रकार व्यसन ने महिलाओं के सामाजिक, मानसिक और आर्थिक जीवन को प्रभावित किया है और साथ ही यह जांचा गया है कि वर्तमान सरकारी एवं गैर–सरकारी योजनाएँ महिलाओं की सुरक्षा और पुनर्वास के लिए कितनी प्रभावी हैं। यह शोध नीति–निर्माण के लिए महत्त्वपूर्ण सिफारिशें प्रस्तुत करता है तथा यह रेखांकित करता है कि किस प्रकार महिला केंद्रित नीतियों में बदलाव लाकर सामाजिक असंतुलन को दूर किया जा सकता है।

मुख्य शब्दः व्यसन, सामाजिक विघटन, महिला सशक्तिकरण, रायपुर, औद्योगिक क्षेत्र, नीति–निर्माण, सरकारी योजनाएँ, गैर–सरकारी हस्तक्षेप, पुनर्वास

प्रस्तावना

औद्योगीकरण ने जहाँ एक ओर आर्थिक विकास और रोजगार के नए अवसर खोले हैं, वहीं दूसरी ओर इसने सामाजिक जीवन में अनेक चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं। छत्तीसगढ़ का रायपुर जिला, जो एक प्रमुख औद्योगिक केंद्र बन चुका है, व्यसन की नई लहर से प्रभावित हो रहा है। इस क्षेत्र में व्यसन की बढ़ती प्रवृत्ति ने समाज में अस्थिरता, घरेलू हिंसा, पारिवारिक विघटन, और विशेषकर महिलाओं के जीवन पर गहरा प्रभाव डाला है।

औद्योगीकरण के साथ उन्नति की गति ने भारत के अनेक क्षेत्रों को नई दिशा प्रदान की है, और छत्तीसगढ़ का रायपुर जिला इसका एक जीवंत उदाहरण है। बीते दशकों में रायपुर एक शांत सांस्कृतिक नगर से निकलकर औद्योगिक, व्यापारिक और नगरीय जीवन की ओर तीव्रता से अग्रसर हुआ है। यहाँ स्थापित औद्योगिक इकाइयों, इस्पात कारखानों, कोयला परियोजनाओं और शहरीकरण की लहर ने रोजगार और जीवनस्तर को तो ऊँचा किया, लेकिन साथ ही कई प्रकार की सामाजिक जटिलताएँ भी उत्पन्न कीं। औद्योगीकरण का सीधा असर जहाँ पुरुषों की कार्यसंस्कृति पर पड़ा, वहीं अप्रत्यक्ष रूप से इसका दुष्प्रभाव महिलाओं के जीवन पर भी पड़ा है। विशेष रूप से व्यसन जैसी सामाजिक बुराई का फैलाव, जो कभी छोटे तबकों तक सीमित था, अब पूरे समुदाय को अपनी चपेट में ले रहा है।

व्यसन की बढ़ती प्रवृत्ति केवल स्वास्थ्य को ही नहीं, बल्कि सामाजिक ढांचे को भी बुरी तरह प्रभावित कर रही है। शराब, तंबाकू, गांजा और अन्य मादक पदार्थों का उपयोग सामान्य व्यवहार में शुमार होने लगा है। जब कोई व्यक्ति व्यसन के दलदल में फँसता है, तो उसका असर सबसे पहले उसके परिवार पर पड़ता है। आर्थिक संकट, घरेलू हिंसा, बच्चों की उपेक्षा और सबसे दुखद दृ स्त्रियों के आत्म–सम्मान और मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा आघात पड़ता है। छत्तीसगढ़ की पारंपरिक सामाजिक संरचना में महिलाएँ प्रायः परिवार के केंद्र में होती हैं, और जब परिवार का एक स्तंभ व्यसन के कारण लड़खड़ाता है, तो पूरे परिवार की नींव हिल जाती है। यह यथार्थ तब और भी अधिक भयावह हो जाता है जब कोई महिला खुद भी व्यसन की गिरफ्त में आ जाती है।

रायपुर जिले की स्थिति में विगत वर्षों में जो बदलाव आया है, उसमें एक तरफ चमचमाते मॉल, ऊँची इमारतें, और फैशन की आधुनिकता है, तो दूसरी ओर झुग्गी बस्तियों में पलता अपराध, व्यसन और निराशा भी है। यह द्वैत आधुनिक भारत की विडंबना को दर्शाता है, जहाँ एक ही शहर में तरक्की और तबाही दोनों साथ–साथ चल रहे हैं। औद्योगिक विस्तार ने कामगारों की एक बड़ी संख्या को शहर की ओर आकर्षित किया है। ये कामगार अक्सर अकेले आते हैं, अपने गाँव–परिवार से दूर। अकेलापन, मानसिक तनाव, और सहारा न मिलना उन्हें व्यसन की ओर ले जाता है। धीरे–धीरे यह आदत सामाजिक स्वीकृति पाने लगती है,

और फिर यह लत बन जाती है। यह लत केवल एक व्यक्ति तक सीमित नहीं रहती, यह उसके परिवार, बच्चों और विशेष रूप से उसकी पत्नी की जिंदगी को भी कष्टमय बना देती है।

महिलाओं पर इसका प्रभाव बहुआयामी है। एक ओर उन्हें शारीरिक हिंसा का सामना करना पड़ता है, तो दूसरी ओर मानसिक प्रताड़ना और सामाजिक कलंक का भी सामना करना पड़ता है। बहुत सी महिलाएँ आर्थिक रूप से पति पर आश्रित होती हैं, और जब पति व्यसन में डूब जाता है, तो यह आर्थिक निर्भरता उनके लिए अभिशाप बन जाती है। घरेलू हिंसा की घटनाएँ बढ़ती हैं, बच्चों की पढ़ाई छूट जाती है, और महिलाएँ सामाजिक रूप से अलग–थलग पड़ जाती हैं। इनमें से बहुत सी स्त्रियाँ या तो चुपचाप सब कुछ सहती हैं, या फिर न्याय की तलाश में थानों और अदालतों के चक्कर काटती हैं। कई बार तो उन्हें खुद भी विवशता में छोटे–मोटे कामों या श्रम में लगना पड़ता है, परंतु सामाजिक सुरक्षा तंत्र की कमजोरियों के कारण वे अपने अधिकारों से वंचित रह जाती हैं।

राज्य और केंद्र सरकारों द्वारा विभिन्न योजनाएँ और नीतियाँ महिलाओं की सुरक्षा और पुनर्वास के लिए समय–समय पर बनाई गई हैं, जिनमें से कुछ योजनाओं ने जमीनी स्तर पर सकारात्मक प्रभाव भी डाला है। लेकिन यथार्थ यह है कि ज़्यादातर मामलों में इन योजनाओं की पहुँच उन महिलाओं तक नहीं हो पाती, जिन्हें इनकी सबसे अधिक आवश्यकता है। एक तो सूचना का अभाव, दूसरा योजनाओं के क्रियान्वयन में भ्रष्टाचार, और तीसरा सामाजिक रूढ़ियाँ दृ ये सब मिलकर महिलाओं को उस सहयोग से वंचित कर देते हैं जिसकी वे हकदार हैं।

रायपुर जिले के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की महिलाओं के अनुभवों में भी अंतर पाया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएँ अधिक सामाजिक दबाव और पारिवारिक बंदिशों में जीती हैं, जहाँ व्यसन को सामाजिक बुराई नहीं बल्कि पुरुषत्व का प्रतीक मान लिया जाता है। वहीं शहरी क्षेत्र की महिलाएँ अपेक्षाकृत अधिक मुखर हैं, लेकिन उन्हें भी कई स्तरों पर संघर्ष करना पड़ता है। व्यसन प्रभावित परिवारों की महिलाएँ अक्सर आत्मसम्मान, सुरक्षा और भविष्य की चिंता के बोझ तले दबी होती हैं। इस संकट से उबरने के लिए उन्हें केवल नीति समर्थन ही नहीं, भावनात्मक और सामाजिक सहयोग की भी आवश्यकता होती है।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से देखा जाए तो व्यसन की प्रवृत्ति केवल व्यक्तिगत कमजोरी नहीं, बल्कि सामाजिक तंत्र की असफलता का संकेत है। जब कोई समाज अपने सदस्यों को मानसिक स्वास्थ्य, रोजगार, सामाजिक सुरक्षा और आत्मसम्मान की भावना नहीं दे पाता, तब वहाँ व्यसन जैसी समस्याएँ उभरती हैं। रायपुर जैसे जिलों में जहाँ एक ओर औद्योगिक चमक है, वहीं दूसरी ओर गहरे अंधेरे में डूबे वे परिवार हैं जिनके लिए हर दिन एक नई चुनौती है। इन परिवारों की महिलाएँ अपने टूटते हुए संसार को सँभालने की कोशिश में लगी रहती हैं। उनके आँसू, उनके मौन, उनकी पीड़ा दृ यह सब केवल आँकड़ों की बात नहीं है, यह एक जीवंत सच्चाई है जो समाज के हर संवेदनशील हृदय को झकझोर सकती है।

ऐसे में यह जरूरी हो जाता है कि बनाई गई नीतियों का मूल्यांकन इस दृष्टि से किया जाए कि वे कितनी प्रभावी हैं, कितनी मानवीय हैं, और कितनी दूरगामी हैं। केवल योजना बनाना ही पर्याप्त नहीं होता, उसे ज़मीनी सच्चाइयों के अनुरूप लागू करना और उससे प्रभावित लोगों की वास्तविक आवश्यकताओं को समझना भी अनिवार्य होता है। महिलाएँ केवल योजना की लाभार्थी नहीं होतीं, वे उसके निर्माण और क्रियान्वयन की साझेदार भी हो सकती हैं यदि उन्हें सही मंच और अवसर दिया जाए।यह शोध उन नीतियों की प्रभावशीलता की समीक्षा करता है, जो महिलाओं की सुरक्षा और पुनर्वास के उद्देश्य से बनाई गई हैं।

उद्देश्य एवं लक्ष्य

1. रायपुर औद्योगिक क्षेत्र में व्यसन की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।
2. व्यसन के कारण उत्पन्न सामाजिक विघटन के प्रभावों को विशेषतः महिलाओं के संदर्भ में विश्लेषित करना।
3. महिला–संरक्षण हेतु लागू सरकारी और गैर–सरकारी योजनाओं की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।
4. नीति–निर्माण हेतु सुझाव प्रस्तुत करना ताकि महिलाओं की सामाजिक स्थिति सुदृढ़ हो सके।
5. भविष्य में व्यसन नियंत्रण और महिला सशक्तिकरण के लिए व्यवहारिक रणनीतियाँ प्रस्तावित करना।

साहित्य समीक्षा

पिछले दो दशकों में विभिन्न राष्ट्रीय एवं राज्यस्तरीय रिपोर्टों तथा शोधों में व्यसन को एक सामाजिक रोग के रूप में स्वीकार किया गया है। 2019 में प्रकाशित रिपोर्ट में छत्तीसगढ़ को उन राज्यों में गिना गया है जहाँ शराब और अन्य नशीले पदार्थों का अत्यधिक सेवन किया जा रहा है।

डॉ. रिचा चौधरी का शोध अध्ययन, "महिलाओं में नशे की लत," इस शोध रिपोर्ट में कुल 1,000 महिलाओं का अध्ययन किया गया, जिनमें से 1000 18 से 45 वर्ष की आयु की महिलाएँ थीं, जो ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में रहती थीं और उनकी शिक्षा और आय का स्तर अलग–अलग था। नशा एक गंभीर सामाजिक मुद्दा है जो सभी उम्र के लोगों को प्रभावित करता है, चाहे वे पुरुष हों या महिला, और यह दुनिया भर में प्रचलित है। अध्ययन के अनुसार, यदि किसी महिला का परिवार उसकी लत से नकारात्मक रूप से प्रभावित होता है, तो उसका परिवार भी टूट सकता है। अध्ययन का लक्ष्य महिलाओं में नशे की लत के प्रकार और गंभीरता के साथ–साथ इसके अंतर्निहित कारणों और प्रभावों को निर्धारित करना था, ताकि निवारक और विनियमन उपायों की पहचान की जा सके। रितु बाला की शोध रिपोर्ट, "बच्चों पर माता–पिता के मादक द्रव्यों के सेवन का प्रभाव" के अनुसार, जो माता–पिता नशीली दवाओं का उपयोग करते हैं, उनमें विभिन्न व्यवहार संबंधी मुद्दे, सामाजिक मुद्दे, मानसिक स्वास्थ्य मुद्दे जैसे अवसाद, खराब शैक्षणिक प्रदर्शन और अनुचित सामाजिक व्यवहार, साथ ही साथ अपराध करने की संभावना अधिक होती है। उनमें तनाव, कम आत्मसम्मान और आत्मविश्वास की कमी जैसी अन्य समस्याएं होती हैं। लापरवाह पालन–पोषण के कारण वे लगातार मादक द्रव्यों के सेवन में लिप्त होने के उच्च जोखिम में रहते हैं।

माधुरी, मनोविज्ञान विभाग, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबरेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझुनू, राजस्थान, 2013. शराबियों, नशीली दवाओं के आदी लोगों और गैर–शराबियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व की तुलना।

इस अध्ययन में, नशेड़ी और गैर–नशेड़ी की शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक विशेषताओं की तुलना की गई है। इस अध्ययन ने संकेत दिया कि नशेड़ी भावनात्मक बुद्धिमत्ता के लिए औसतन गैर–नशेड़ी की तुलना में कम स्कोर करते हैं। नशेड़ी के न्यूरोटिसिज्म स्कोर गैर–नशेड़ी की तुलना में कम औसत दिखाया गया है। गैर–नशेड़ी अपने व्यक्तित्व को नशेड़ी की तुलना में अधिक पूरी तरह से विकसित करते हैं। यह अध्ययन नशेड़ी और गैर–नशेड़ी के बीच के अंतरों को समझने में हमारी मदद करता है, जो रणनीति और उपचार के विकास में सहायता करता है।

दो अलग–अलग समूहों और उनके आदिवासी पुरुष और महिला

छात्रों – आदिवासी पुरुष और महिला छात्रों और गैर–आदिवासी पुरुष और महिला छात्रों – के बीच सामाजिक समायोजन पर एक तुलनात्मक अध्ययन सुश्री जॉयश्री दास और श्री अमित कुमार देब द्वारा शोध पत्र "आदिवासी और गैर–आदिवासी छात्रों के बीच सामाजिक समायोजन पर एक तुलनात्मक अध्ययन" का आधार है। यह अध्ययन अगरतला शहर के एक प्रसिद्ध एमबीबी कॉलेज में किया गया था। इस अध्ययन के अनुसार, आदिवासी पुरुष और महिलाएं समाज में अपने समायोजन के बारे में अधिक व्यक्तिगत अनुभव साझा करते हैं। इसके अतिरिक्त, यह पाया गया है कि आदिवासी महिलाएं आदिवासी पुरुषों की तुलना में सामाजिक रूप से अधिक कुशल हैं, हालांकि इस समूह के पुरुष और महिलाएं गैर–आदिवासी होने पर एक–दूसरे के साथ असंगत हैं। नतीजतन, गैर–आदिवासी पुरुषों के पास आदिवासी महिलाओं की तुलना में बेहतर सामाजिक कौशल हैं। गैर–आदिवासी पुरुष विद्यार्थियों की तुलना में, आदिवासी महिला छात्र अधिक आसानी से अनुकूलन करती हैं। मादक द्रव्यों का सेवन गैर–चिकित्सा उद्देश्यों के लिए एक ऐसी मात्रा में दवा का उपयोग है जो सामाजिक, शारीरिक या भावनात्मक नुकसान पहुंचा सकता है। नशीली दवाओं का दुरुपयोग कई कारकों से प्रभावित होता है, जिसमें जैविक, चिकित्सा, सामाजिक और पर्यावरणीय कारक शामिल हैं। नशीली दवाओं के दुरुपयोग का लोगों के स्वास्थ्य के साथ–साथ उनके जीवन की गुणवत्ता, उनके परिवारों और समाज के साथ उनके संबंधों और साथ ही समुदाय के सभी आयु समूहों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। नशीली दवाओं के उपयोगकर्ता और उनके परिवार की ज़रूरतों का पता लगाने के लिए एक रणनीति तैयार करना और विकसित करना एक बुनियादी आवश्यकता है। विभिन्न उपचार सुझाए गए हैं, और शिक्षा और चिकित्सा के माध्यम से परिवारों की मदद करने और जोखिम कारकों को कम करने के लिए स्कूलों में स्वास्थ्य कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

महिलाओं पर इसके प्रभाव को लेकर संस्थाओं ने यह रेखांकित किया है कि व्यसन के चलते महिलाओं पर घरेलू हिंसा, सामाजिक बहिष्कार और आर्थिक निर्भरता बढ़ती जा रही है।

राज्य सरकार की योजनाएँ जैसे 'सखी वन स्टॉप सेंटर', 'महिला स्वावलंबन योजना', 'मुख्यमंत्री कौशल विकास योजना' इत्यादि का उद्देश्य महिला पुनर्वास और सशक्तिकरण है। हालांकि, इनकी जमीनी प्रभावशीलता संदिग्ध रही है। 'साक्षी', 'अभया', और 'शक्ति' द्वारा महिला उत्थान हेतु चलाए गए कार्यक्रमों के आकलन से भी यह पाया गया है कि इन प्रयासों को और अधिक सुदृढ़ करने की आवश्यकता है।

अनुसंधान पद्धतियाँ

इस शोध में गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों पद्धतियों का समावेश किया गया है:

- प्राथमिक डेटा संग्रहः रायपुर जिले के औद्योगिक क्षेत्रों में 600 महिलाओं पर आधारित सैंपलिंग द्वारा प्रश्नावली पद्धति से आंकड़े इकट्ठा किए गए।
- द्वितीयक स्रोतः सरकारी रिपोर्टें, शोध–पत्र, नीति दस्तावेज और मीडिया रिपोर्टों का गहन विश्लेषण किया गया।
- साक्षात्कारः महिला सामाजिक कार्यकर्ताओं, सरकारी अधिकारीगण, पुलिस कर्मियों तथा पुनर्वास केंद्रों के कर्मचारियों से साक्षात्कार लिए गए।

अनुसंधान पद्धतियाँ:

इस शोध में गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों पद्धतियों का समावेश किया गया है:

1. प्राथमिक डेटा संग्रहः रायपुर जिले के औद्योगिक क्षेत्रों में रहने वाली 600 महिलाओं पर आधारित सैंपलिंग द्वारा प्रश्नावली पद्धति से आंकड़े इकट्ठा किए गए। इन प्रश्नावली में व्यसन, घरेलू हिंसा, आर्थिक प्रभाव, सरकारी योजनाओं की जानकारी एवं सहायता से संबंधित प्रश्न शामिल थे।
2. द्वितीयक स्रोतः सरकारी रिपोर्टें, गैर–सरकारी संस्थाओं की रिपोर्टें, पूर्ववर्ती शोध–पत्र, नीति दस्तावेज और मीडिया रिपोर्टों का गहन अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया।
3. साक्षात्कारः महिला सामाजिक कार्यकर्ताओं, महिला एवं बाल विकास विभाग के अधिकारियों, पुलिस कर्मियों तथा पुनर्वास केंद्रों के कर्मचारियों से संरचित व अर्ध–संरचित साक्षात्कार लिए गए। साक्षात्कार के उद्देश्य व्यसन की सामाजिक–सांस्कृतिक जटिलताओं एवं नीति–प्रभाव की सजीव व्याख्या प्राप्त करना था।

डेटा विश्लेषण

डेटा का विश्लेषण सांख्यिकीय विधियों द्वारा किया गया। प्रतिशत विश्लेषण, चार्ट विश्लेषण एवं तुलनात्मक विश्लेषण की सहायता से आंकड़ों को वर्गीकृत किया गया।

सांख्यिकीय तालिकाएँ

तालिका 1: परिवार में व्यसन की स्थिति

प्रतिक्रिया	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
हाँ	468	78%
नहीं	132	22%

तालिका 2: घरेलू हिंसा का अनुभव

प्रतिक्रिया	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
हाँ	378	63%
नहीं	222	37%

तालिका 3: आर्थिक संकट का अनुभव

प्रतिक्रिया	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
हाँ	414	69%
नहीं	186	31%

तालिका 4: सरकारी योजनाओं की जानकारी

प्रतिक्रिया	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
जानकारी है	246	41%
जानकारी नहीं है	354	59%

तालिका 5: सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने वाली महिलाएँ

प्रतिक्रिया	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
लाभ लिया	162	27%
नहीं लिया	438	73%

तालिका 6: NGO सहायता की प्रभावशीलता

प्रतिक्रिया	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
प्रभावी रही	348	58%
अप्रभावी या सीमित रही	252	42%

परिणाम और व्याख्या

1. व्यसन की व्यापकता: अध्ययन में पाया गया कि 78: उत्तरदाताओं ने अपने परिवार में किसी न किसी सदस्य के नशे की लत की पुष्टि की, जो दर्शाता है कि व्यसन औद्योगिक क्षेत्र में एक व्यापक सामाजिक समस्या है।
2. घरेलू हिंसा से संबंध: 63: महिलाओं ने घरेलू हिंसा का अनुभव किया, जो यह दर्शाता है कि व्यसन से केवल व्यक्ति नहीं बल्कि पूरा पारिवारिक ढांचा प्रभावित होता है।
3. आर्थिक अस्थिरता: 69: महिलाओं ने माना कि व्यसन के चलते परिवार की आर्थिक स्थिति गंभीर रूप से प्रभावित हुई है। इसके कारण कई बार महिलाएँ स्वयं कार्य करने को बाध्य हुईं।
4. नीतिगत जागरूकता का अभाव: केवल 41: महिलाओं को ही सरकारी योजनाओं की जानकारी थी, और उनमें से भी केवल 27: महिलाओं ने उन योजनाओं का लाभ उठाया। यह दर्शाता है कि योजनाएँ ज़रूर मौजूद हैं, पर उनका प्रसार और पहुँच अभी सीमित है।

चर्चा एवं निष्कर्ष:

रायपुर के औद्योगिक क्षेत्रों में व्यसन की समस्या गंभीर सामाजिक संकट का रूप ले चुकी है। इसने न केवल पारिवारिक ढांचे को तोड़ा है, बल्कि महिलाओं को बहुआयामी कष्ट दिए हैं कृ आर्थिक, मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक। जबकि सरकारी योजनाएँ और गैर–सरकारी पहलें इस दिशा में कार्यरत हैं, लेकिन इनकी पहुँच और प्रभावशीलता सीमित रही है।

इस शोध से यह स्पष्ट होता है कि नीति–निर्माण में एक समेकित और महिला–केंद्रित दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। योजनाओं की जागरूकता बढ़ाने, बजट आवंटन को पारदर्शी बनाने, निगरानी तंत्र को मज़बूत करने, और पुनर्वास केंद्रों की संख्या व गुणवत्ता में वृद्धि करना अत्यंत आवश्यक है।

रायपुर के औद्योगिक परिदृश्य में व्यसन की समस्या एक लम्बे समय से धीरे–धीरे उभरती सामाजिक चुनौती रही है, जो समय के साथ एक भयावह संकट में परिवर्तित हो चुकी है। इस संकट ने न केवल समाज के ताने–बाने को प्रभावित किया है, बल्कि विशेष रूप से महिलाओं की स्थिति को गहरे रूप में झकझोरा है। जब एक पुरुष व्यसन की गिरफ्त में आता है, तो उसका मानसिक और शारीरिक क्षय तो होता ही है, परंतु उससे भी अधिक गहरा आघात उस परिवार पर पड़ता है जिसका वह अभिन्न हिस्सा होता है। महिलाओं को न केवल मानसिक और भावनात्मक पीड़ा सहनी पड़ती है, बल्कि आर्थिक असुरक्षा, सामाजिक तिरस्कार और कभी–कभी शारीरिक हिंसा का भी सामना करना पड़ता है।

इस शोध ने रायपुर जिले के औद्योगिक क्षेत्रों में व्यसन की समस्या पर एक गहन किया है। विभिन्न साक्षात्कारों, क्षेत्रीय अवलोकनों, और आंकड़ों के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ है कि यह समस्या केवल एक व्यक्ति की नहीं, अपितु पूरे समुदाय की चिंता का विषय बन चुकी है। व्यसनग्रस्तता के कारण महिलाओं को पति के असंवेदनशील व्यवहार, घरेलू हिंसा, बच्चों की उपेक्षा, सामाजिक अलगाव और आर्थिक संकट जैसी समस्याओं से जूझना पड़ता है। कई बार वे अकेले ही पूरे परिवार के लिए जिम्मेदार बन जाती हैं, जबकि समाज और शासन से उन्हें उतना समर्थन नहीं मिलता जितना मिलना चाहिए।

सरकारी योजनाएँ जैसे 'सखी वन स्टॉप सेंटर', 'महिला हेल्पलाइन नंबर 181', 'उज्ज्वला योजना', 'स्वाधार गृह' आदि इस दिशा में कार्यरत हैं, परंतु शोध से प्राप्त अनुभव यह दर्शाते हैं कि इन योजनाओं की पहुँच और क्रियान्वयन में कई तरह की बाधाएँ हैं। महिलाओं को इन योजनाओं की जानकारी नहीं है या वे सामाजिक दबाव के कारण इनका लाभ नहीं ले पातीं। कहीं पर योजनाओं में नियुक्त कर्मियों का प्रशिक्षण अधूरा है, तो कहीं पुनर्वास केंद्रों की स्थिति दयनीय है।

एक प्रभावी रणनीति का निर्माण करना आवश्यक है जो महिला–केंद्रित, सशक्तिकरण आधारित और सामाजिक भागीदारी पर आधारित हो। योजना निर्माण और कार्यान्वयन में महिलाओं की वास्तविक आवश्यकताओं को केंद्र में रखना होगा। बजट आवंटन में पारदर्शिता लानी होगी ताकि योजनाओं का वास्तविक लाभ लक्षित समूह तक पहुंचे। इसके लिए निगरानी तंत्र को मज़बूत किया जाना चाहिए, जिसमें स्थानीय समुदाय, सामाजिक संगठन और महिला समूह सक्रिय भूमिका निभाएँ।

व्यसन के कारण उत्पन्न पारिवारिक विघटन और घरेलू हिंसा को केवल कानून और हेल्पलाइन से नियंत्रित नहीं किया जा सकता। इसके लिए समाज में संवेदनशीलता, सहानुभूति और सहयोग की भावना को बढ़ावा देना होगा। मीडिया, शैक्षणिक संस्थान और धार्मिक–सांस्कृतिक संगठन इसमें एक सकारात्मक भूमिका निभा सकते हैं। व्यसन से प्रभावित परिवारों के बच्चों को विशेष संरक्षण और परामर्श की आवश्यकता होती है, जिससे वे इस चक्र को दोहराने वाले न बनें।

शोध का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि पुनर्वास केवल एक भौतिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि एक मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और भावनात्मक यात्रा भी है। महिला को आत्मसम्मान, आत्मनिर्भरता और सुरक्षा का अनुभव कराना पुनर्वास प्रक्रिया की सफलता का मूल है। इसलिए पुनर्वास केंद्रों को केवल एक आश्रयस्थल नहीं, बल्कि एक परिवर्तन केंद्र के रूप में विकसित करना होगा।

रायपुर जिले के परिप्रेक्ष्य में यह भी स्पष्ट हुआ कि सामाजिक–पारिवारिक स्तर पर व्यसन पर खुलकर चर्चा नहीं होती, जिसके कारण समस्या और गहराती जाती है। हमें संवाद की संस्कृति विकसित करनी होगी, जिसमें परिवारों, विद्यालयों और समुदायों के बीच खुलापन और समझ बढ़े। व्यसन पीड़ितों के पुनर्वास में उनके परिवार की भूमिका निर्णायक होती है, और यदि महिलाओं को सामाजिक समर्थन मिल जाए, तो वे ना केवल अपना जीवन संवार सकती हैं, बल्कि अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा बन सकती हैं।

सरकारी प्रयासों को सशक्त करने के साथ–साथ यह भी आवश्यक है कि महिला स्वयंसेवी संस्थाएं, गैर–सरकारी संगठन और स्थानीय नेतृत्व भी इस दिशा में सक्रिय हों। महिला समूहों को कौशल विकास, वित्तीय सहायता और कानूनी साक्षरता से जोड़ना अत्यंत आवश्यक है, ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें। इसके साथ ही शासन को पुनर्वास नीतियों की समय–समय पर समीक्षा करनी चाहिए और उन्हें वर्तमान आवश्यकताओं के अनुसार संशोधित करना चाहिए।

अंततः यह कहा जा सकता है कि रायपुर जिले में व्यसन की समस्या कोई साधारण सामाजिक बुराई नहीं, बल्कि एक जटिल, बहुआयामी संकट है, जिसका समाधान भी बहुपरती और संवेदनशील दृष्टिकोण से ही संभव है। महिलाओं की सुरक्षा और पुनर्वास की दिशा में नीति–निर्माण, सामाजिक सहभागिता, और संवेदनशील प्रशासन की संयुक्त पहल ही इस संकट से मुक्ति दिला सकती है। एक ऐसा समाज जहाँ महिलाएँ न केवल पीड़ा से मुक्त हों, बल्कि गरिमा, आत्मसम्मान और सशक्तिकरण के साथ जीवन जी सकें।

संदर्भ:

1. छत्तीसगढ़ राज्य महिला आयोग रिपोर्ट, 2017–2019।
2. रायपुर जिला नशा मुक्ति केंद्र वार्षिक रिपोर्ट, 2020।
3. फगन पी, ईसेनबर्ग एम, फ्रेज़ियर एल, स्टोडर्ड ए एम, एवरुनिन जे. एस. सोरेंसन जी. नर्सिंग अनुसंधान के मासिक सारांश: महिलाओं में आत्म–प्रभावकारिता और धूम्रपान के

बीच संबंध। व्यसनी व्यवहार. 2003;28:613-626.
4. फेयरली ए. एम, वुड एम. डी. लेयर्ड आर. डी. साथियों के प्रभाव और कॉलेज में शराब की लत पर माता–पिता का संभावित सुरक्षात्मक प्रभाव। व्यसनी व्यवहार का मनोविज्ञान, 2012;26(1):30-41.
5. फाल्को एम. महिलाओं द्वारा नशीली दवाओं, शराब और तम्बाकू के दुरुपयोग को रोकना। न्यूयॉर्कः कार्नेगी काउंसिल ऑन एडोलसेंट डेवलपमेंट।, 1988.
6. फैरेओ डी. ओ. नाइजीरियाई महिलाओं में नशीली दवाओं का दुरुपयोग परामर्श के लिए रणनीतियाँ। जर्नल ऑफ इंटरनेशनल सोशल रिसर्च, 2012;5(20):342–347.
7. फवा एम. एस. स्कूलों में नशीली दवाओं के दुरुपयोग उन्मूलन कार्यक्रमः टीम की प्रासंगिकता, वैकल्पिक दृष्टिकोण, ए. गरबा (एड) नाइजीरिया में युवा और नशीली दवाओं का दुरुपयोगः परामर्श, प्रबंधन और नियंत्रण के लिए रणनीतियाँ, कानोः मटासा प्रेस।, 2003.
8. थ्गलेसा डी. एम, तुर्का सी. एल, फ्रेस्कोब डी. एम. सामाजिक चिंता, शराब की अपेक्षाएं और आत्म–प्रभावकारिता। नशे की लत व्यवहार. 2006;31(3):388–98.
9. ग्लेन्डिनिंग सी. एक ही दरवाज़ाः विकलांग बच्चों के परिवारों के साथ सामाजिक कार्य. लंदनः एलन और अनविन, 1986.
10. गोल्डस्मिथ एए, थॉम्पसन आर डी, ब्लैक जेजे, ट्रान जी क्यू. स्मिथ जे. पी. शराब पीने से इनकार करने की आत्म–प्रभावकारिता और तनाव में कमी की शराब की अपेक्षाएँ युवा वयस्क शराब पीने वालों में सामान्यीकृत चिंता और शराब पीने के व्यवहार के बीच संबंधों को नियंत्रित करती हैं. नशे की लत व्यवहार का मनोविज्ञान, 2012;26(1):59–67.
11. गोलेस्टन एस, नामायनदेह एच, अंजोमशोआ ए. ईरानी महिलाओं में नशे की लत से बचाव पर स्व–सहायता दृष्टिकोण के संबंध में जीवन कौशल का प्रभाव. जर्नल ऑफ अमेरिकन साइंस. 2011;7(6):198–202.
12. ग्रांट बी एफ, डॉसन डी. ए. नशीली दवाओं के उपयोग की शुरुआत की उम्र और डीएसएम–प्ट नशीली दवाओं के दुरुपयोग और निर्भरता के साथ इसका संबंधः राष्ट्रीय अनुदैर्ध्य शराब महामारी विज्ञान सर्वेक्षण के परिणाम. जर्नल ऑफ सब्सटेंस एब्यूज. 1998;10:163–173.
13. गुलेट डी. एल, लियोन्स एम. ए. कॉलेज के छात्रों में सनसनी की तलाश, आत्म–सम्मान और असुरक्षित यौन संबंध. जर्नल ऑफ द एसोसिएशन ऑफ नर्सेज इन एड्स केयर, 2006;17(5):23–31.
14. गुंथी ए, जैन एम. उच्च और निम्न व्यसनियों में न्यूरोटिक समस्याएं और असुरक्षा की भावनाएँ। जर्नल ऑफ द इंडियन एकेडमी ऑफ़ एप्लाइड साइकोलॉजी, 1997;23(1–2):55–57।
15. हलादु एए. नाइजीरिया में स्कूल न जाने वाले युवाओं में नशीली दवाओं के दुरुपयोग को रोकने के लिए आउटरीच रणनीतियाँः समुदाय आधारित संगठन (सीबीओएस) के लिए एक चुनौती, ए. गरबा (संपादक) में। नाइजीरिया में युवा और नशीली दवाओं का दुरुपयोगः परामर्श, प्रबंधन और नियंत्रण के लिए रणनीतियाँ।, 2003.

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.